मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार एवं मुशायरा में बिहार के राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–30.11.2016, समय–पूर्वा॰ 04.30 बजे, स्थान–ए॰एन॰ सिन्हा इन्सटीच्यूट, पटना)

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ एजाज अली अरशद जी, प्रति कुलपति प्रो॰ मो॰ तौकीर आलम जी, कौमी काऊंसिल उर्दू के निदेशक प्रो॰ इरतेजा करीम जी, कुवैत से आये हुए श्री अफरोज आलम एवं सईद रौशन जी, कनाडा से आने वाली मोहतरमा उरूज राजपूत, काठमांडू (नेपाल) से आये हुए डॉ॰ साकिब हारूनी, विभिन्न देशों और प्रांतो से आये हुए महान् शिक्षाविद् एवं कविगण, मीडिया– प्रतिनिधिगण, इस समारोह में मौजूद देवियों एवं सज्जनों!!

मुझे आज मौलाना मजहरूल हक़ अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय, पटना द्वारा आयोजित इस 'अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार एवं कवि सम्मेलन' में शिरकत कर बहुत खुशी हो रही है। महान् स्वतंत्रता–सेनानी मौलाना मजहरूल हक़ हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। देश की आजादी में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसलिए, उनके नाम पर स्थापित इस विश्वविद्यालय के सेमिनार का उद्घाटन करते हुए सर्वप्रथम मैं उनको स्मृति को नमन करता हूँ।

भारत एक ऐसा महान् देश है, जिसमें विभिन्न प्रकार की धार्मिक विचारधाराओं, भाषाओं, संस्कृतियों एवं परंपराओं को समेट कर और सबको एक साथ लेकर चलने की क्षमता रही है। यही हमारी सभ्यता है, यही हमारी संस्कृति है और हमारी ताकत भी।

कहा जाता है कि साहित्य और शायरी अपने जमाने के समाज, माहौल, और तहजीब का दर्पण है। जैसा समाज होगा, जैसी सभ्यता होगी, वैसा ही साहित्य होगा। किसी देश की ऐतिहासिक, सामाजिक और

सांस्कृतिक गतिविधियों की मुकम्मल तस्वीर उस देश के साहित्य में मिलती है। कहा जाता है कि–

''अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है,

मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।''

उर्दू जुबान शुरू से ही देश की समरस संस्कृति और साझी विरासत को पेश करती रही है, जो इस महान देश की पहचान है।

सच तो यह है कि इस जुबान की शुरूआत ही बोलचाल की भाषा के रूप में हुई है, इसलिए भारत में आने वाले विदेशी शासकों ने, चाहे वह ईरान और अरब से आये हों या पश्चिमी देशों से, सबने इस भाषा को प्रोत्साहित किया ; ताकि आम लोगों के दुख–दर्द और उनकी भावनाओं के साथ–साथ, यहाँ की संस्कृति को भी साहित्य के माध्यम से समझा जा सके। इसके साथ ही, यहाँ के धार्मिक ग्रंथों को भी फारसी और अरबी भाषाओं में अनुवाद कर प्रस्तुत करने का सिलसिला शुरू हुआ। सामने का उदाहरण 'रामायण' और 'पंचतंत्र' का फारसी एवं अरबी में अनुवाद है, जो कई शताब्दी पहले ही हुआ है।

इस प्रकार देखा जाये तो यह आदान–प्रदान दोनों ओर से हुआ। साझा संस्कृति को आगे बढ़ाने और विभिन्न भाषाओं को एक–दूसरे के निकट लाने में सूफियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। अगर गौर किया जाये तो साधु और संतों ने उर्दू शायरी के बिल्कुल शुरूआती जमाने में ही, आपसी भाईचारे एवं धर्मनिरपेक्षता और इंसानी दोस्ती की भावनाओं को प्रस्तुत किया है। अमीर खुसरो हों या संत कबीर, वली दकनी हों या फायेज देहलवी–सबों की भावनाएँ एक हैं। ये सभी धार्मिक उदारता की ऐसी मिसाल छोड़ गये हैं, जो हमें आज भी रास्ता दिखा सकती है। इस संबंध में एक बड़ा नाम वली मोहम्मद नजीर अकबरावादी का है, जिनकी

कविताओं में भारत का अंग–अंग मुस्कुराता है, और जो हमारी साझा संस्कृति का खूबसूरत उदाहरण है।

मित्रों, मैंने सार्वजनिक जीवन में रहते हुए, साहित्यकारों से बहुत कुछ सीखा है। साहित्य राजनीति का भी पथ–प्रदर्शक होता है। मुंशी प्रेमचंद, जिन्हें हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में महारथ हासिल थी, उन्होंने कहा था कि – ''हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो– जो हममें गति और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं।'' मैं समझता हूँ किसी भी भाषा के साहित्य या काव्य के लिए प्रेमचन्द की ये पंक्तियाँ प्रेरणा का पाथेय हैं।

मित्रों, उर्दू सिर्फ मुसलमानों की जुबान है, ऐसी बात नहीं। दरअसल, उर्दू शायरी और साहित्य को आगे बढ़ाने में हर जमाने में मुसलमानों के साथ–साथ, हिन्दू तथा पारसी और जैन धर्म से संबंध रखनेवालों ने भी हिस्सा लिया है। पंडित ब्रजमोहन चकबस्त, रामप्रसाद 'बिस्मिल' और रघुपति सहाय फिराक गोरखपुरी को सभी जानते हैं।

भारत की आजादी के बाद, नौजवानों की एक बड़ी संख्या रोजगार की तलाश में विदेश में जाने पर विवश हो गयी। उनमें उर्दू वाले भी थे। इनमें से कुछ वहाँ रच–बस भी गये। मगर यहाँ से जाने के 40–50 वर्ष बाद भी अपने देश की मिट्टी और रीति–रिवाज से उनकी मोहब्बत कम नहीं हुई। उन्होंने विदेशों में भी न केवल उर्दू जुबान को अपने दिलों में जिन्दा रखा, बल्कि भारत की उस साझा संस्कृति से भी जुड़े रहे, जो हमारी पहचान है। ऐसे लोगों की भी एक बड़ी संख्या इस अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में उपस्थित है। यह देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। विश्व के विभिन्न शहरों से आये हुए लोगों का बिहार की पावन धरती पर मैं हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करता हूँ।

मित्रों, मुझे लगता है कि आज का यह आयोजन अत्यन्त सफल सिद्ध होगा, जिससे भारत की साझी और समरस संस्कृति की सुगंध दूर–दूर तक के वातावरण को महकाये रखेगी। आप सबको आनेवाले नये वर्ष की अग्रिम शुभकामनाएँ और मुबारकवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।